953/943

दैनिक जागरण
जागरण सिटी
पृ० 5
12-03-2015

खेती में नई तकनीक के इस्तेमाल पर जोर

कृषि विज्ञान मेले के दूसरे दिन वैज्ञानिकों व किसानों ने किया आपस में संवाद

जागरण संवाददाता, पश्चिमी दिल्ली : पूसा में आयोजित हो रहे कृषि विज्ञान मेले के दूसरे दिन किसानों ने वैज्ञानिकों को खुलकर अपनी समस्याएं बताई। इस दौरान वैज्ञानिकों ने किसानों को समय के अनुकूल चलने की सलाह देते हुए कहा कि वे नई-नई तकनीकों का खेतीबाड़ी में इस्तेमाल करें। इन तकनीकों के इस्तेमाल से खेती की लागत में एक ओर कमी आएगी वहीं दूसरी ओर उत्पादकता बढ़ेगी।

दूसरे दिन खेतिहर महिला सशक्तीकरण व अधिक आय एवं रोजगार के लिए बागवानी और अन्य प्रौद्योगिकी विषय पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस दौरान किसानों ने वैज्ञानिकों से उन तकनीकों की जानकारी ली, जिनके इस्तेमाल से लागत में कमी आए। वैज्ञानिकों ने किसानों से कहा कि वे उत्पादों को सीधे बेचने के बजाय मूल्य संवर्द्धन कर उसे बाजार में बेचें। ऐसा करने से जहां खाली समय में रोजगार का सृजन होगा वहीं उनकी आय भी बढ़ेगी। इस पूरी प्रक्रिया में महिलाओं की भूमिका पर जोर दिया गया। वैज्ञानिकों ने खेतिहर महिलाओं को उन उत्पादों की जानकारी दी, जिसके मूल्य संवर्द्धन से उनकी आय में बढ़ोतरी होगी।

कार्यक्रम के दौरान वैज्ञानिकों ने कहा कि आने वाले समय में खेतिहर महिलाओं की भूमिका बढ़ने वाली है।

मौसम पूर्वानुमान का ज्ञान व वैज्ञानिक सलाह जरूरी

वैज्ञानिकों ने किसानों से कहा कि किसान मौसम पूर्वानुमान की जानकारी अवश्य अपने पास रखें। इसके लिए नजदीकी कृषि विज्ञान केंद्र या पूसा संस्थान के वैज्ञानिकों से सूचना तकनीक या फोन के माध्यम से संपर्क कर जानकारी हासिल की जा सकती है। जैसे यदि बारिश होने का पता चल जाए तो किसान को खेत में किसी प्रकार की कोई दवा का छिड़काव नहीं करना चाहिए। इसी प्रकार यदि बारिश की पूर्व सूचना हो तो सिंचाई का कार्य बंद कर देना चाहिए। इसी प्रकार वैज्ञानिकों से संपर्क होने पर किसानों को कृषि के क्षेत्र में आई नई तकनीकों का पता चलेगा।

किचन गार्डन पर जोर

वैज्ञानिकों ने महिलाओं से आग्रह किया कि वे घर के पास खाली पड़ी जमीन का इस्तेमाल किचन गार्डन के तौर पर कर सकती हैं। ऐसा करने से सब्जी के मद में होने वाले खर्च को बचाया जा सकेगा। यदि यह कार्य वैज्ञानिक तरीके से किया जाए तो सब्जी का इतना उत्पादन हो सकेगा कि घरेलू जरूरतों को पूरा करने के बाद बाजार के लिए भी सब्जी बची रहेगी।

...ताकि खेतीबाड़ी हो आसान

गौतम कुमार मिश्रा, पश्चिमी दिल्ली

चाहे सिर पर अनाज का बोझ ढोना हो या फिर खेत में झुककर निराई- गुड़ाई का काम। किसान अक्सर इन कामों के बाद काफी थकान महसूस करते हैं। मेहनत वाले इन कामों के बाद किसानों को कमर दर्द, पीठ दर्द, सिर दर्द की तकलीफ का सामना करना पड़ता है। किसानों की इन तकलीफों को देखते हुए पूसा के वैज्ञानिकों ने खेतीबाड़ी में प्रयुक्त होने वाले ऐसे यंत्रों व औजारों का निर्माण किया है जिनके इस्तेमाल से वे कम से कम मेहनत कर अधिक से अधिक काम कर सकेंगे। इस दौरान थकान उन्हें पहले से कम होगी। किसानों या कृषि कर्मियों द्वारा खेती से संबंधित वजन या पशुओं के लिए चारे को सिर या पीठ पर ढोना बहुत आम बात है। जब वजन को सिर पर रखते हैं तो इसका सीधा असर सिर, रीढ़ व कमर की हड्डी पर पड़ता है। इससे बचाव के लिए एक हर्नेस तैयार किया गया है। इस को सिर के ऊपर रखते हैं, लेकिन सिर के ऊपर रखे वजन का पूरा भार केवल सिर पर न पड़कर कंधों व सिर में विभाजित हो जाता है।

निराई-गुड़ाई का काम हुआ आसान

पंक्तियों में बोई गई फसलों में खड़े-खड़े निराई- गुड़ाई के लिए एक सरल उपयोगी व प्रभावी यंत्र का विकास किया गया है। इसका वजन करीब सात किलोग्राम है। पहिया लगे इस यंत्र को व्यक्ति खड़े-खड़े आगे पीछे धकेलकर चलाता है। जिससे जहां झुककर निराई गुड़ाई करने की मुसीबत से मुक्ति मिलेगी वहीं थकान भी कम होगी।

चारा काटने की मशीन का सुरक्षा यंत्र

कई बार मशीन से चारा काटने के दौरान किसान दुर्घटना का शिकार हो जाते हैं। चारा काटने की मशीन के पहिया, तेज ब्लेड व फीड रोलर से दुर्घटना की संभावना बनी रहती है। इसको ध्यान में रखते हुए ब्लेड रक्षक, पहिया लॉक व चेतावनी रोलर वैज्ञानिकों ने तैयार किया है। इन उपकरणों को चारा काटने की मशीन में फिट कर इस काम को पूरी तरह सुरक्षित बनाया जा सकता है।

प्रतिलिपि :-
1. निजी सचिव निदेशक कार्यालय
2. निजी सचिव संयुक्त निदेशक (प्रसार)
3. निजी सचिव संयुक्त निदेशक (अनुसंधान)
4. निजी सचिव अधिष्ठाता/संयुक्त निदेशक (शिक्षा)
5. प्रभारी कैटैट
6. प्रभारी पी-पी-आई
7. प्रभारी यू. एस. आई

सुनीता गुप्ता 12/3/15
प्रभारी पुस्तकालय सेवाएं

सुनीता गुप्ता 12/3/15
प्रभारी पत्रिका एवं समाचार पत्र अनुभाग

DJAKMU/1061
13/03/15

[illegible] 12/3/15